हिन्दी साहित्य में हास्य व्यंग्य
[काव्य के विशेष संदर्भ में]

*डॉ. डी.एस. ठाकुर

शोधपत्र-हिन्दी

हास्य एवं व्यंग्य दोनों ही विशेषण बोध प्रतीमान है, हिन्दी साहित्य में ही नहीं जीवन में संज्ञा, सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होते हैं। जीवन में सभी रिश्तों का आधार प्रेम है। सुख और दुख दोनों का मिलन बिन्दु है। दोनों में हास्य व्यंग्य केन्द्रित है। कभी शब्दो में तो कभी अर्थो में। ऐतिहासिक, प्रागैतिहासिक ग्रंथो में भी हास्य व्यंग्य का पुट पाते हैं। आदि कवि वाल्मीकि एवं महान कवि वेद व्यास इस दृष्टि से विशेष उपयोगी है। मंथरा, सूर्पणखा, त्रिजटा, कुंभकर्ण सभी समाज एवं धर्म को रूपायित करते है। आज भी जीवन के विविध क्रियाकलापों, प्रसंगों में दृष्टिगोचर होते हैं। महाभारत में भी अष्टावक्र का जनक के सभा, कुबड़ी, सुदामा, कृष्ण की मैत्री, भीम का शौर्य एवं अशन, शिशुपाल का कृष्ण के प्रति कहे शब्द व्यंग्य की अद्भुत छटा है। इतना ही नहीं दानी कर्ण हो अथवा गांधारी एवं धृतराष्ट्र का पुत्र मोह पर निर्मल वर्मा ने लिखा ''थोड़ी देर के लिए हम गांधारी की पट्टी और धृतराष्ट्र की अंधता पर आज भी समसामयिक परिवेश में प्रांसगिक है। महावीर, गौतम बुद्ध के पालि साहित्य में उपदेश के माध्यम से व्यंग्योक्ति में समाज एवं धर्म की स्थापना करते हैं। हिन्दी साहित्य में चाहे अपभ्रंश, लोककथा, जातक कथाएँ सभी में हास्य व्यंग्य निहित है वीरगाथा काल की हो अथवा विद्यापति की रचनाएँ श्रृंगारिक ही क्यों न हो, जीवन एवं जगत के मानवोचित परिवर्तन का आंकलन है। हास्य एवं व्यंग्य दोनों समाहित है। वीसल देव रासो (नरपति नाल्ह) आल्हा खण्ड (जगनिक ये ग्रंथ विलासी राजाओं को सजग करने के लिए पृथ्वी राज रासो (चन्दर बरदाई) की अद्भुत कृति है जिसमें व्यंग्य में व्यंजना निहित है।

संतो ने इस क्षेत्र में विशेष कार्य किया है। इनकी दृष्टि में व्यक्ति को मानवोचित व्यवहार करना एवं ईश्वर के प्रति ईमानदार होना है स्वयंभू, नामदेव, तुकाराम, पीपा सभी ने हास्य व्यंग्य के माध्यम से कर्म एवं धर्म को स्थापित किया है। आज भी लोग इनके विचारों की पूजा करते हैं। डॉ. एम. ए. करंदीकर ने लिखा है कि —— ''एकनाथ और तुकाराम ने भक्ति को मोक्ष से भी ऊँचा कहा है। उन्होंने एक स्वर में यश या अर्थ प्राप्ति का निषेध किया है।''(1) (भारतीय समीक्षा, डॉ. नगेन्द्र, पृष्ठ–205) हरिषंकर परसाई ने ठीक ही लिखा – ''व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है और विसंगतियो, मिथ्याचारो और पाखण्डो का पर्दाफाश करता है।''

संत कबीर का दर्शन हास्य व्यंग्य की चरम सीमा है उनकी दृष्टि में जीवन सत्य का आधार है। जीवन के उतार चढ़ाव को दार्शनिक ढंग से व्यक्त किया है। कबीर ''अनहद'' नाद की बात करते हैं इड़ा, पिंगला, सुषुमना की बात करते हैं। लेकिन बाह्याडम्बरी दुनिया के लोग उनकी इस सच्चाई को जानना नहीं चाहते है। कबीर पंथी संत कबीर को मानना चाहते हैं, वे जानने की बात करते हैं। परमात्मा अनुभव गम्य है। व्यक्ति को अनुभव, अनुभूति एवं सहानुभूति से गुजरना पड़ेगा। ईश्वर यदि सुख का सष्जन करता है। तो दुख को अनुभव करने की बात कहते है। कबीर मध्य कालीन भारत की विषमता को बारीकी से अनुभव किए थे। ज्ञानी से ज्ञान की पूछने की बात करते हैं :—— ''जाति न पूछो साधू की पूछ लिजिए ज्ञान। /मोल करो तलवार का पड़ी रहन दो म्यान।'' (2)(कबीर ग्रंथावली, श्याम सुंदर दास, पृष्ठ–101) वे कहते है कि अपने भीतर ब्रह्म को ढूंढो और जब तुम जान जाओगे तब इधर –उधर भटकने की प्रवृत्ति से दूर हो जाओगे इसलिए कहते है –''पाहन पूजे हरि मिले। तो मै पूजू पहाड़।।'' (3) (कबीर ग्रंथावली, पृष्ठ–115)

दिखाने के लिए तीर्थ यात्री पर व्यंग्य करते हैं :–

''तीरथ गए दोउ जन चितमन चंचल चोर।/एकयो पाप न उरतया दस मन लाए और।'' (4) (कबीर ग्रंथावली, वही)

इसलिए वे प्रेम को आभास करने को कहते है –

लाला मेरे लाल की जित देखू तीत लाल।/लाली देखन मैं गयी, मैं भी हो गई लाल।। (5)/(कबीर ग्रंथावली, वही)

कबीर प्रभावी होने की बात करते हैं।

''सात समुन्दर मसि करन लेखनि सब बनराई।ध्सब धरती कागद करन प्रभु गुन लिखा न जाई।'' (6) (कबीर ग्रंथावली, वही) वर्तमान के लिए कबीर विशेष प्रासंगिक है। आज आपसी भाई चारे की कमी है। पढ़े लिखे कपटी लोगों पर व्यंग्य करते हैं। ''पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय।ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।। (7) (कबीर ग्रंथावली, पृष्ठ–115, श्याम सुंदर)

रामायण, महाभारत, वेद, पुराण, उपनिशद एवं विभिन्न धर्म के श्रेष्ठ ग्रंथों को जीवन में उतार चुके थे। आ चर्य किन्तु कटु सत्य है।

''मसि कागज छुयो नहीं। (8) (पृष्ठ–51)

कबीर का दर्शन मन एवं तन से परे हैं लेकिन आत्म केन्द्रित है। उनके हास्य एवं व्यंग्य कटु होते हुए भी जागतिक है। लोगो के लिए उपयोगी है। जीवन के रहस्य को समझने की बात करते हैं :–

फूले फूले चुन लिए काल्हि हमारी बारि।।'' (9)
(कबीर ग्रंथावली, पृष्ठ–151)

इसी तरह क्षण भुंगर नश्वर शरीर पर व्यंग्य करते हैं :–

* अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, शा. ई. राघवेन्द्र राव विज्ञान महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

देखत ही छिप जायेगा ज्यों तारा परभात।'' (10) (वही)

वे व्यष्टि से समष्टि चेतना की बात करते है जो नहीं समझते उनके लिए हास्य व्यंग्य –

''हेरत हेरत हे सखि रहना कबीर हिराई।(11)

(कबीर ग्रंथावली, वही)

ईश्वर के प्रमाण के बारे में संसारी लोगों को बस में करना आसान नहीं इसलिए कबीर सीधे शब्दो में कहते हैं :––

''भारी कहौ तो बहु डरौ हलका कहूँ तो झूठ। (12) (कबीर ग्रंथावली, वही) असल में आत्मा परमात्मा के रहस्य अगम्य है ज्ञानी ही जान सकता है। हरि जैसा है वैसा रहे, तू हरषि हरषि गुण गाई।। (13) (कबीर ग्रंथावली, वही) आज व्यक्ति सब कुछ जानते हुए भी अनजान बना है पाप करेगा लेकिन पुण्य की बात करता है।

जो तू कहना जान दे वह नहि कहता कोय।'' (14) (कबीर ग्रंथावली, वही)

इसी तरह –एक जोति से सब थै उपजा कौन ब्रह्म कौन सूदा।''(15)

डॉ. रामविलास शर्मा ने लिखा ''संत साहित्य सामन्ती बन्धनों का विरोध करके सहज मानवता की प्रतिष्ठा की उसने जनता की जातीय और जनवादी चेतना को पुष्ट किया और उसके क्रोध, आशा और विजय कामना को वाणी दी।'' (16) (विराम चिन्ह–डॉ. रामविलास शर्मा, पृष्ठ–146)

मलिक मुहम्मद जायसी प्रेम के कवि है आज प्रेम का विक त रूप देखने को मिलता है। पद्मावत में जायसी ने नागमती के माध्यम से हास्य व्यंग्य को सामने लाते है–

''नागमती चितउर पथ हेरा पिय जो गए पुनि कीन्ह न फेरा।(17) (पद्मावत जायसी – पृष्ठ–51) दिकभ्रमित नारी ब्रह्म की पहचान नहीं कर सकती यही प्रेम में बाधा है। जायसी पटरानी पर व्यंग्य किया है। मानसरोवर पवित्रता की पहचान कर लेता है पद्मावती रूपी ब्रम्ह को जान लेता है तभी जायसी लिखते है – 'कहा मान सर चाह सो पाई, पारस रूप इहा लगि आई। (पद्मावत्, जायसी, ग्रंथावली, पृष्ठ–120)

मध्य कालीन कवियों में तुलसी हास्य व्यंग्य में अग्रणी है। व्यक्ति, परिवार, समाज, राज्य ही नहीं पूरे विश्व के लिए उपयोगी है उनकी दृष्टि में ना समझ भी सम्मान के अधिकारी है। हंसहि बक दादुर चातक ही, हँसति मलिन विमल बतक ही।'' (18) (राम चरित मानस, बालकाण्ड, तुलसी, पृष्ठ–11) तुलसी मानव पर ही नहीं देवता पर व्यंग्य करते हैं – ''ऊंच निवासु नीच करतूरती, देखि न सकहिं पराई विभूति।'' (19) (अयोध्या काण्ड, पष्ठ–115) व्यावहारिक धरातल पर अहंकार भरे परशुराम पर लखन का कथन देखिए–

''कहेउ लखन मुनि सील तुम्हारा, कोई नहि जान विदित संसार। माता पित हि डरिन भए नीकें गुय रिनु रहा सोच जड़ जी के।''(20) (बालकाण्ड, रामचरित मानस, पृष्ठ–140) विवाह के समय जनकपुर में मंगल गान का एक अंश देखिए जिसमें धर्म, दर्शन के साथ हास्य व्यंग्य भी है –बोली सिद्धि सुनहु रघुनंदन तुम हमार नंददोई। (21) एक बात तुम सौ हम पूछैं लाल न राखहु गोइ।। जानकी की सहेलियाँ राम पर कटाक्ष करती है, लेकिन भील का त्याग नहीं करती –

लखन कहै यह सुनहु लाड़ली।/जे हि विधि जहाँ लिखि दीना।'' (22) तुलसी हास्य व्यंग्य के माध्यम से रीति, नीति, मर्यादा की बात करते हैं :– ''सखि वचन सुनि तब रघुनंदन बोले मृदु मुसकाते।/आपनी चालि दिखावहु प्यारी कहहू आज की बाते।/कोई नहीं जन्मे मात पिता बिनु बंधी वेद की रीति। (23)/तुम्हरे ते महि ते सब उपजी अस हमरे नही रीति।''इसी तरह नीचे लिखे अर्द्धवली में हास्य है लेकिन उपहास नहीं – ''अति उदार करतूतिदारसब अवध पुरी की वामा।/खीर खाय पैदा सुत करती पति का कछु नाहि कामा।।'' (24) (बालकाण्ड, रामचरितमानस, पृष्ठ–221) ज्वलंत समस्या पर तुलसी जी की दृष्टि देखिए – ''बाढ़े खल बहु चोर जुआरा ले लम्पट पर धन परदारा।/मान हिं मातु पिता नही देवा साधु सन करवावहि सेवा।/जिन्ह के यह आचरन भवानी ते जानहु निशिचर सम प्राणी।।'' (25)

मानवोचित व्यवहार एवं निरामिष को रेखांकित करते हैं :– ''अति खल के विषई बग कागा एहि सर निकट न जाई अभागा।/सम्बुक भेक सेवार समाना इन्हा न कथा विषय रस नाना।।/तेहि कारन आवत हिय हारे, कामी काक वलाक विचारे।/आवत एहि सर अति कठिनाई, राम कृपा बिनु आई न जाई।।'' (26)/ कवितावली का रोमांच हास्य व्यंग्य जब साधु संत को पता चलता है कि राम जी वनवास आ रहे है कि चरण रज से शापित अहिल्या तर गई चलो कृपा कीजिए कि– ''व्है व्है सबै सिला चन्द्र मुखि बिनु नारि दुखारै।'' (27)/(कवितावली, तुलसीदास, पृष्ठ–21) दिव्य चक्षु सूरदास वाग्विदग्धता, वक्रता एवं कूट के लिए प्रसिद्ध है। हास्य व्यंग्य की अद्‌भुत छटा कृष्ण उद्धव के प्रसंग में देखने को मिलता हैः–

हास्य की झांकी इस प्रकार भी है –''कहत नटत रीझत खिझत, मिलत खिलत लजियात।/मरे भौन में करत है नैन ही सो बात।।'' (34)/व्यंजना का एक रूप देखिए :– ''पहिले अपनाय सुजान स्नेह सो क्यो फिर तेह कै तोरियै जू।/निराधार आधार है धार मझार दई गहि बांह बोरियो जू।/घन आनन्द अपने चातिक को गुन।/बांधि लै मोह न छोरियै जू, रस प्यास कै जाय बढाए कै।/आस विसास में योबिस धौरि जू। (35)/(घनानंद चयनिका, किशोरीलाल, पृष्ठ–21)

प्रेम को जो नहीं समझ पाते वह भी उपहास का पात्र बनता है :–''प्रीति की रीति सु क्यों न समुझै भीति के पीन परे को प्रभानै।/या मन की जो दशा घन आनन्द जीवन की जीवनि जान ही जानै।'' (36)/(आ.विश्वनाथ प्रसाद मिश्रा, घनानंद कविता, पृष्ठ–31)/रहीम के काव्य जहाँ एक ओर नीति, व्यक्ति से युक्त है वही दूसरी ओर व्यंग्यात्मक की चरम सीमा है। ''जो रहीम उत्तम प्रकृति का कर सकत कुसंग।/चंदन विष व्यापत नही लपटे रहत भुजंग।'' (37)/इसी तरह व्यावहारिक धरातल पर प्रतीक के रूप में–/'/रहिमन हीरा कब कहै लाख टका है मोल।'' (38)/(रहीम शतक जय, डॉ. बालकृष्ण, पृष्ठ–11) / जे बिनु जाने कढुहि नहिं जन्यो जात विशेष।/सोई प्रेम जेहि जानि कै, रहि न जात कछु शेष। (39)/(रसखान के दोहे, प्रेमवाटिका से) यों तो हिन्दी साहित्य हास्य व्यंग्य से ओत–प्रोत है, मैथिलीशरण की सादगी में भी व्यंग्य है –''हम कौन थे क्या हो गए है और क्या होंगे अभी।/आओ विचारे आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।'' (40)/(भारत भारती) महावीर प्रसाद द्विवेदी पत्रकारिता के माध्यम से साहित्य सेवा किए हैं /अन्धा धुन्ध मच्चौ सब देसा मानहु राजा रहत विदेशा।/गो द्विज श्रुति आदर न हिहोई मानहु नष्पति विधर्मी कोई।''(41) (अंधेर नगरी, भारतेन्दु, पृष्ठ–11)

'ध्रुव स्वामिनी' प्रसाद की चुनौती पूर्ण रचना है जिसमें पुरूषों के लिए चुनौती है ध्रुव स्वामिनी व्यंग्य करती है कि– ''यदि तुम मेरी रक्षा नहीं कर सकते तो मुझ पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं।''(42)/(ध

ध्रुव स्वामिनी–जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ–23) कुकुरमुत्ता, बादल राग, तोड़ती पत्थर, निराला की विषमता को दूर करने का प्रयास है :– वह तोड़ती पत्थर देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर।/जिसके तले बैठी हुई स्वीकार। (43)/(राग विराग, निराला, पृष्ठ–51)/आत्मा का अपमान, प्रेत और छाया से रति।'' (44)/(तारापथ ताज, पंत)/इसी तरह कवि भारत में वर्ग विषमता पर व्यंग्य किया हैः–/तीस कोटि संतान नग्न तन अर्ध क्षुधित शोषित निरस्त्र जन।/मूढ़ असभ्य, अशिक्षित, निर्धन, नतमस्तक तरू तल निवासिनी। (45) (तारापथ, भारत माता, पंत)/नागार्जुन, भवानी प्रसाद, मुक्तिबोध, धुमिल ने व्यंग्य बोध को कविता में प्रस्तुत भारद जोशी ने ठीक ही लिखा – व्यंग्य कमजोर आदमी पर नहीं लिखा जा सकता उस पर हास्य लिखा जा सकता है, व्यंग्य उस पर लिखना चाहिए जो ताकतवर हो और स्थितियों में पूरी क्रुरता के साथ उपस्थित हो।'' उदाहरण– ''कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास।'' (47)/(सतरंगो पंखे वाली, अकाल और उसके बाद, नागार्जुन)/''सत्य स्वयं घायल हुआ गई अहिंसा चूक।/जगह जगह दगने लगी शासन की बन्दूक।'' (48)/(शासन की बंदुक, नागार्जुन)/मुक्तिबोध, प्रस्तुति में सामाजिक चेतना की अभाव को दूर करते है।/''लेखक की कठिनाई यह नही कि कमी है विषयो की/वरन यह है कि आधिक्य उनका ही उनको सताता है।/और वह ठीक चुनाव कर नहीं पाता। (49)/(मुझे कदम कदम पर–मुक्तिबोध)/'इसलिए मैं हर गली में और हर सड़क पर/झांक झाक देखता हूँ हर एक नए चेहरा।' (50)/प्रत्येक गतिविधि प्रत्येक चरित्र वह हर एक आत्मा का इतिहास। (अंधेरे में, मुक्तिबोध) अतः महत्वपूर्ण बिन्दु के रूप में कह सकते है कि जीवन के लिए हास्य व्यंग्य विशेष उपयोगी है। भारतेन्दु की मुकरियाँ– ''तीन बुलाए तेरह आवे निज निज विपदा रोई सुनावे।/आंखो फूटी न भरा पेट क्यों सखि साजन नहि ग्रेजुएट।'' (51)/इसी तरह बेरोजगारी पर व्यंग्य –/''नौकरी की खोज में घूमते है ग्रेजुएट।/जिस तरह धोबी का कोई खर खुला।।'' (52)/बेढ़ब बनारसी का हास्य व्यंग्य –/''नजाकत औरतो सी बाल लम्बे साफ मूँछे है।/नए फैशन के लोगों की अजब सूरत जनानी है।/जनेऊ इनकी नेक टाई है, पाउडर इनका टीका है।/नये बाबू की व्हिस्की आजकल गंगा जल का पानी।'' (53) शोषण की बात रमई काका सीधे साधे शब्दो में कहते है– ''चिड़िया चुगती दानों को, पर हम चुनते नादानों को।''(54)/एक नए कवि विनोद गोदरे–/''बेकारी की कठिन समस्या का हल होगा सच्चा।/घर घर में यदि जन्म ले सके बिना पेट का बच्चा।'' (55)/भूखमरी, बेकारी की समस्या चरम में है। रामेश्वर करूण तमसा ने लिखा :– ''तन मन धन समय लगाकर दर दर के बने भिखारी।/बी.ए. की पदवी पाकर, वरदान मिला बेकारी।/चल सका न कोई चारा हट सकी न यह बेकारी।/अब दूर करेगी इसको गोली अफीम की भारी।।'' (56)/वैश्वीकरण के प्रभाव व्यंग्य में भी दिखाई देता है, हास्य रस एक कवि ने लिखा है – ''श्रम धन पितु धन मातु धन इन पर धर मत ध्यान।/जब आवे ससुराल धन सब धन धूल समान।/सब धन धूल समान, ध्येय से उंचे मानो।/मिले लखपति सरसुर, वही से प्रभु से वर मांगो।/कह काका कवि दुलहिन हो भेंडी या कानी।/कर लीजै स्वीकार नहीं इसमें कुछ हानी।'' (57) साहित्यकार जीवन के हर पहलू को जानता समझता है यथार्थपरक विषमताओं को दूर करता है। सोहन लाल द्विवेदी ने ठीक ही लिखा है कि – ''वर्ण वर्ण में छिड़ा द्वन्द्व है। जाति जाति से जूझ रही है।'' (58) (युगाधार) अतः कह सकते है कि व्यंग्य, समाज, धर्म, नीति की स्थापना में सहायक भी है। रघुवीर सहाय ने लिखा है कि आज व्यक्ति में दया करूणा नहीं है – ''धीरे धीरे चला अकेले सोचा साथ किसी को ले लू। फिर रह गया अकेला सड़क पर सब थे। सभी मौन थे, सभी निहत्थे। सभी जानते थे यह, उस दिन उसकी हत्या होगी।'' (59) (राम दास कविता से) इसलिए श्रीकांत वर्मा ने ठीक ही लिखा है, व्यक्ति प्रेम का दिखावा करता है :– ''आदमी से प्रेम करने का ठेका ले रखा है कसाई ने। मुझे न औरो से प्रेम है न अपने से।।'' (60) (अंतिम वक्तव्य से) धर्म, दर्शन, समझने का है जानने का है। मानकर स्थापित करने का नही हरिनारायण व्यास ने लिखा – ''मैं तुम्हें रचनाओं में बंद कर दिया,/शब्द, अर्थ और आकार से बांध दिया है।/जड़ता पहना दी है तुम्हे अभिशप्त अहल्या!/इस अकेले पन का बोझ उठाते हुए पड़ी रहो। (61) (कला, कविता से)/इसी तरह के भाव 'वर्षा की सुबह' कविता में पाते है –''चलने में असमर्थ निर्वाक पत्थर,/झरने का खिलवाड़ करता हाथ,/लुढ़काता है फेंक देता है उसे।'' (62)/(सीताकान्त महापात्र, पृष्ठ–25) हरिशंकर परसाई का निंदा रस आज के संदर्भ में विशेष प्रांसगिक है। आज व्यक्ति कपटी एवं मायावी, छली है दिखाने के लिए प्रेम करता है, जैसे लिखा :– ''धृतराष्ट्र जन्माध थे किन्तु उनकी भुजाओ में बड़ी शक्ति थी ऐसा प्रसिद्ध है कृ उन्हें मालूम हुआ कि उनका ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन भीम के हाथो मारा गया....कृष्ण धृतराष्ट्र के मनतवय भांप गया उन्होंने भीम के लोहे के पुतले को आगे बढ़ा कहा भीम खड़े हैं। धृतराष्ट्र के दबाने से लोहे का पुतला चूर चूर हो गया। (63) (निंदा रस, हरिशंकर परसाई) वास्तव में हास एवं व्यंग्य के माध्यम व्यक्ति सब कुछ पा लेता है। एक प्रसिद्ध जापानी कवि नागूची ने भगवान से वरदाना मांगा था कि ''जब जीवन के किनारे की हरियाली सुख गयी हो, चिड़ियों की चहक मूक हो गई हो, सूर्य को ग्रहण लग गया हो, मेरे मित्र एवं साथी मुझे कांटो में अकेला छोड़ कर कतरा गए हो और आकाश का सारा क्रोध मेरे भाग्य पर बरसने वाला हो तो हे भगवान तुम मुझ पर इतनी कष्पा करना कि मेरे ओठो पर हंसी की उजली लकीर खिंच देना।'' (64) (वृहत निबंध भास्कर, पृष्ठ–256) इसलिए कहा गया है कि ''मुखाकृति व्यक्ति मानस की सूचिका है।'' (Face is the index of mind.) निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि हास्य व्यंग्य जीवन के लिए आव यक है किसी बात को सीधे न कह कर व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत कर देते हैं जैसे दुष्यन्त ने लिखा है –

''तुमने इस तालाब से रोहू पकड़ने के लिए,/छोटी छोटी मछलियाँ चारा बना कर फेंक दी।'' (65)/तो दूसरी ओर –/''न हो कमीज तो पावो से पेट ढक लेना।/ये लोग कितने मुनासिब है इस सफर के लिए।'' (66)/वर्तमान परिवेश को देखते हुए साहित्यकार शब्दो के माध्यम से भाव प्रकट कर सकता है। इसी तरह नीरज की कविता कि –

''बेदाग सूत वाले, सौ दाग सूत वाले।/इस हार कुछ दुशाले उस हार कुछ दुशाले।/कुछ कह रहे इसे लो कुछ कह रहे उसे लो। (67)/इससे बदन छिपालो उससे कफन बना लो।''/कवि नश्वर जीवन की ओर संकेत करता है –/''रात इधर जलती है, दिन उधर निकलता है।/कोई यहाँ रूकता है कोई वहा चलता है।/दीप और पंतगे में फर्क सिर्फ इतना है/एक जल के बूझता है एक बूझ के जलता है।'' (68)/समग्र मूल्यांकन के रूप में कह सकते है कि कोई भी विचारक, दार्शनिक, तत्वदर्शी साधक, साहित्यकार सभी का ध्येय एवं प्रेम व्यक्तित्व के माध्यम से सामाजिक चेतना विकसित करना होता है। साहित्य की सभी विधाएं चाहे दष्श्य काव्य

हो अथवा श्रव्य काव्य सभी के विचार पथ प्रदर्शन करना होता है। हास्य व्यंग्य विधा जीवन की उस सच्चाई को सामने लाता है आज भी उपर्युक्त मनीषियों के विचार देश, काल, परिस्थिति के अनुरूप प्रयोग किए जाते हैं। रोमन के जुविनल होरेस का कथन है कि–"जब तुम्हारे पड़ोसी के घर आग लगी हो तो तुम्हारी अपनी संपत्ति भी खतरे में है।" आज हमें समझने की जरूरत है। अतः कह सकते है कि जेरोल्ड डी (फ्रेंच) जो स्विफ्ट (अंग्रेजी), गैरी बॉल्डी जी (इटेलियन) देशभक्त होते हुए भी माने हुए व्यंग्यकारो ने समय, आवश्यकता के अनुरूप व्यंग्य किए है। एक शायर ने लिखा–"लोग नाहक किसी मजबूर को कहते है बुरा।/आदमी अच्छे हैं, पर वक्त होता है बुरा।।"/व्यंग्य जीवन के प्रत्येक पक्ष को स्पर्ष करता है। हरिशंकर परसाई ने ठीक ही लिखा है कि – "हास्य वह मिसरी है, जो उपदेश की कड़वी कुनैन को भी इतना मीठा बना देती है कि छोटे–छोटे बच्चो से लेकर बड़े बड़े बुड्ढ़े तक उसे बड़ी रूचि से चट कर जाते हैं।" (69)/(सूक्ति सागर, रमाकांत गुप्त, प श्ठ–275)अतः कह सकते है कि एक ओर जहाँ –/"हास्य संसार का सबसे बड़ा उपहार है।"/वही दूसरी ओर हमें सावधान करते हैं कि :– /"दूसरे की मूर्खता पर किये गए व्यंग्य पर हम हँसते हैं लेकिन अपने पर किए गए व्यंग्य पर रोना भूल जाते हैं।" (सूक्तिसागर, रमाशंकर गुप्त, पृष्ठ–595) अतः कह सकते है कि जीवन में हास्य साधन है तो व्यंग्य साध्य दोनो का जीवन में सामंजस्य जरूरी है। डॉ. रामविलास भार्मा ने ठीक ही लिखा है कि "व्यंग्य का मूल्य इसमें है कि वह हमें अपनी कमजोरियों से सचेत करता है जहाँ–जहाँ पतित मनोवृत्तियों से संतोष कर बैठ रहे है वहाँ प्रतिभाशाली... अपने तीव्र व्यंग्यवाणो से उन्हें जगाया है ... अच्छे व्यंग्यपूर्ण...समाज और हमारे साहित्य की नितान्त आवश्कता है।" (70) (विराम चिन्ह, डॉ. रामविलास शर्मा, पृष्ठ–57) डॉ. ज्ञान प्रकाश ने ठीक ही लिखा है "हास्य साध्य है तो व्यंग्य साधन, व्यंग्य का उद्देश्य साधन भाव के साथ हास्य होना चाहिए तिरस्कार, अपमान, प्रतिशोध और आक्रमणपूर्ण रचनाएं व्यंग्य नहीं कही जा सकती।" (हिन्दी की हास्य व्यंग्य मयी कविता का सांस्कृतिक विवेचन, पृष्ठ–41)

समग्र मूल्यांकन के रूप में कह सकते है कि जीवन भावना केन्द्रित है। साहित्य भावना सृजन का केन्द्र है। हिन्दी साहित्य ही नहीं अपितु जीवन के किसी भी विषय क्षेत्र की बात हो, सभी में हास्य व्यंग्य का समावेश है, आचार, व्यवहार, धर्म, कर्म, दर्शन, कला सभा में हास्य व्यंग्य लक्षित होते हैं। व्यक्ति चूंकि बुद्धि एवं विवेक को परिभाशित करता है इसलिए इसी के अनुरूप कार्य करना चाहता है। हास्य व्यंग्य के केन्द्र में सुख एवं दुख दोनों है। परम्परा रूढ़ि भी इसको प्रभावित करते हैं। सामाजिक, धार्मिक, राजनीति, आर्थिक सभी परिस्थितियों का आकलन इसमें होता है, महान विचारक की रचनाएँ, देशकाल, परिस्थिति को ही प्रस्तुत करते हैं। संघर्श भी उपादान के रूप में काम करते हैं, सजग एवं युग धर्मी विचारक अनुभव को जीवन में हास्य व्यंग्य के आधार पर प्रस्तुत करते है, समाज में हम सभी रहते है, लेकिन सभी का सोच, विचार एक जैसे नहीं रहता। महान दार्शनिक, चिंतक, विचारक, इनके प्रमाण है, व्यक्ति, समाज, राज्य की अनेक समस्याएँ है, इन्हीं को तत्वदर्शी, मनीषी बुराईयों को दूर कर अच्छाईयों को स्थापित करना चाहता है। किसी के लिए देशभक्ति से बढ़कर कोई दूसरी चीज नहीं तो किसी के लिए समाज की समस्याएँ ही सब कुछ है। तो किसी के लिए मानवता तो किसी के लिए दार्शनिक सभी हास्य व्यंग्य को आधार बनाते है। पात्र, चरित्र, भाषा में इन्हीं तत्वों को प्रतिफलित करता है। चाहे वह आदिकवि महर्षि वाल्मीकि या युग दृष्टा महर्षि द्वपायन वेद व्यास, पालि के धर्मग्रन्थ में धर्म एवं कर्म मर्यादित है लेकिन व्यंग्य भी निहित है। गौतम के उपदेश, महावीर स्वामी का सम्यक दृष्टिकोण सभी में व्यंग्य बोध है। जितने संत कवि हुए है सभी के विचार, व्यक्ति, समाज में व्याप्त रूढ़ियों का निराकरण है। देशप्रेम का जुनून, तिलक, मदनमोहन, गांधी, नेहरू, चन्द्रशेखर, सुभाश, भगत सभी में इनके विचार में केवल उपदेश नहीं बल्कि ऐसे लोगों पर व्यंग्य है, जो देश के साथ नहीं थे, राजा राम मोहन राय, दयानंद, केशवचन्द, ईश्वर चन्द्र, विवेकानन्द सभी व्यंग्य के माध्यम से जीवन को केन्द्रित करने की बात करते है। साहित्य में भारतेन्दु, प्रेमचंद, माखनलाल, प्रसाद, निराला, पंत के साहित्य समाज को मर्यादित करने का है, भले ही भावना प्रधान हो, लेकिन साहित्य समाज का सजग प्रहरी है, उपर्युक्त सभी साहित्यकारों के विचार में हास्य एवं व्यंग्य है, समस्त रचनाएं इनके प्रमाण है। अतः कह सकते है कि हास्य व्यंग्य के केन्द्र में है और व्यंग्य हास्य के कहीं कहीं वाग्विदग्ध तो कहीं कूट पर तो कहीं वक्रोक्ति के रूप, अभिधा, लक्षणा, व्यंजना के रूप, तो कहीं रहस्य के रूप सामतने आता है। तुलसी का एक अर्द्धवलि देखिए जब राजा जनक पहली बार राम को देखते है और देखते ही मुस्कराने लगे है – "इन्हहीं विलोकत अधि अनुरागा, बरबस ब्रह्म मन हि मन त्यागा।" तुलसी कर्म, धर्म और मर्म तीनों का निर्धारण करते हैं इस रहस्य को विरले ही समझ पाते है, इसमें हास्य व्यंग्य दोनों है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 सं.डॉ.नगेन्द्र भारतीय समीक्षा 9 उ.प्र.हिन्दी, 2 मलय, व्यंग्य और सौंदर्य यात्रा संस्थान 3 श्याम सुन्दर दास, कबीर ग्रंथावली 101 4 श्याम सुन्दर दास, कबीर ग्रंथावली 5–7 वहीं 116 8 श्याम सुन्दर दास, कबीर ग्रंथावली 115 9 श्याम सुन्दर दास, कबीर ग्रंथावली 51 10 श्याम सुन्दर दास, कबीर ग्रंथावली 11 श्याम सुन्दर दास कबीर ग्रंथावली 151 12 श्याम सुन्दर दास, कबीर ग्रंथावली 51 13 श्याम सुन्दर दास, कबीर ग्रंथावली 14 श्याम सुन्दर दास कबीर ग्रंथावली 151 15 श्याम सुन्दर दास कबीर ग्रंथावली 16 डॉ.राम विलास शर्मा विराम चिन्ह 146 वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 17 सं.श्याम सुन्दर दास पद्मावत जायसी 51 संजय बुक, वाराणसी 18 तुलसीदास रामचरित मानस 11 गोरखपुर, उ.प्र. 19 तुलसीदास रामचरित मानस 115 20 तुलसीदास रामचरित मानस 140 21 तुलसीदास रामचरित मानस 221 22 तुलसीदास रामचरित मानस 221 23 तुलसीदास रामचरित मानस 221 24 तुलसीदास रामचरित मानस 221 25 तुलसीदास रामचरित मानस 475 26 तुलसीदास रामचरित मानस 475 27 तुलसीदास कवितावली 21 28 तुलसीदास कवितावली 21